भारत सरकार
रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय
उर्वरक विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2579

जिसका उत्तर मंगलवार, 11 अगस्त, 2026/20 श्रावण, 1948 (शक) को दिया जाना है।

उर्वरकों की गुणवत्ता का नियंत्रण और उनका दुरुपयोग रोकना

2579. श्री नरेश बंसल:
श्री बृज लाल:
श्री मिथलेश कुमार:

क्या **रसायन और उर्वरक** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा नवीन उर्वरक उत्पादों की शुरुआत के माध्यम से पोषक तत्वों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई पहलों का ब्यौरा क्या है;
(ख) सल्फर-कोटेड यूरिया (यूरिया गोल्ड) के प्रारंभ होने के बाद से इसके उत्पादन, वितरण और इसे अपनाए जाने के संबंध में ब्यौरा क्या है; और
(ग) यूरिया की अनिवार्य नीम-कोटिंग के कार्यान्वयन तथा उससे प्राप्त लाभों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्रीमती अनुप्रिया पटेल)

(क): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (आईएनएम), और संतुलित उर्वरण के माध्यम से उर्वरक के कुशल उपयोग को बढ़ावा देता है ताकि पोषक तत्वों की उपयोग क्षमता को बढ़ाया जा सके, फसल उत्पादकता और मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सके। परिषद ने सटीक उर्वरक अनुप्रयोग के लिए मृदा परीक्षण फसल प्रतिक्रिया (एसटीसीआर) दृष्टिकोण और साइट विशिष्ट पोषक तत्व प्रबंधन प्रौद्योगिकियों के आधार पर सामान्य उर्वरक सिफारिशें (जीएफआर) तैयार की हैं। आईसीएआर इनके उपयोग की सिफारिश करने से पहले विभिन्न कृषि जलवायु स्थितियों के तहत नए उर्वरक उत्पादों का लगातार मूल्यांकन और सत्यापन भी करता है। इनमें नाइट्रीकरण अवरोधक (जैसे एग्रोटिन/यूरिएज अवरोधक प्रौद्योगिकियां), नैनो उर्वरक, पानी में घुलनशील उर्वरक, अनुकूलित उर्वरक, संपुष्टीकृत उर्वरक, तरल उर्वरक, जैव उर्वरक, ओर्गेनो-खनिज उर्वरक, और अन्य वैकल्पिक पोषक तत्व स्रोत शामिल हैं, जिसमें पोषक तत्वों की उपयोग दक्षता में सुधार करने, पोषक तत्वों के नुकसान को कम करने और उर्वरको की उपयोग दक्षता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

(ख): सलफर लेपित यूरिया (यूरिया गोल्ड) के शुभारंभ के बाद से इसके उत्पादन और बिक्री का विवरण **अनुलग्नक** में दिया गया है।

(ग): यूरिया के सभी घरेलू उत्पादकों और आयातकों के लिए वर्ष 2015 के बाद से 100% नीम लेपित यूरिया (एनसीयू) की आपूर्ति करना अनिवार्य है। नीम लेपन (कोटिंग) के प्राथमिक लाभों में से एक इसके धीमी गति से अवशोषित होने के कारण, एनसीयू की खपत सामान्य यूरिया की तुलना में कम हो जाती है, फसल की ग्राह्यता में सुधार होता है और पर्यावरणीय नुकसान कम होता है। अनुसंधान के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि एनसीयू के उपयोग के कारण औसत उपज में 8.25% वृद्धि हुई है। इसके अलावा, एनसीयू के अनुप्रयोग से नाइट्रोजन की हानि लगभग 10%-15% तक कम हुई है।

नीम-लेपित यूरिया (एनसीयू) एक प्रभावी नाइट्रीकरण अवरोधक (Nitrification Inhibitor) के रूप में कार्य करता है, जिसके परिणामस्वरूप सामान्य दानेदार यूरिया की तुलना में मृदा में NH_4^+-N की मात्रा अधिक तथा NO_2^--N की मात्रा कम बनी रहती है। हालांकि, इसका प्रभाव मृदा के प्रकार, फसल तथा क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है। विभिन्न अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि नीम-लेपित यूरिया मृदा में नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाता है, NO_3^- के निक्षालन (Leaching) को कम करता है तथा NH_3 के वाष्पीकरण (Volatilization) से होने वाली नाइट्रोजन की हानि को न्यूनतम करता है। अलग-अलग तरह की मिट्टी पर की गई रिसर्च से लगातार यह पता चला है कि नाइट्रोजन की रिकवरी ज़्यादा होती है, कम नाइट्रोजन डालने पर भी पैदावार बेहतर होती है और नाइट्रोजन का नुकसान कम होता है।

*****

अनुलग्नक

यह अनुलग्नक दिनांक 11.08.2026 के राज्य सभा अतारांकित प्रश्न सं. 2579 के उत्तर के भाग (ख) के लिए है।

क्र.सं.	कंपनी का नाम	वर्ष वार उत्पादन (एमटी में)				अभी तक कुल उत्पादन (एमटी में)	वर्ष वार बिक्री (एमटी में)				अब तक कुल बिक्री (एमटी में)
		2023-24	2024-25	2025-26	2026-27 (जुलाई, 2026 तक)		2023-24	2024-25	2025-26	2026-27 (जुलाई, 2026 तक)	
1.	**आरसीएफ**	3791.720	26115.102	10104.560	7122	**47133.382**	3288	25595	11087.72	3045.52	**43016.24**
2.	**एनएफएल-पानीपत**	शून्य	24	463	शून्य	**487**	शून्य	10	380	शून्य	**390**
3.	**एनएफएल-नंगल**	शून्य	शून्य	201	शून्य	**201**	शून्य	शून्य	108	शून्य	**108**